हिन्दी साहित्य का इतिहास लेखन परंपरा

डॉ. नवीन नन्दवाना

हिन्दी विभाग

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- ग्रंथ का नाम – हिंदी साहित्य का इतिहास
- प्रकाशन वर्ष - 1929
- यह नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शब्द सागर' की भूमिका में लिखा गया जिसे बाद में स्वतंत्र पुस्तक के रूप में 'हिंदी साहित्य का इतिहास' के रूप में प्रकाशित कराया गया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- यह 1929 स्वतंत्र पुस्तक के रूप में प्रकाशित हुआ।
- इस ग्रंथ में संवत् 1050 से संवत् 1984 तक के लगभग 900 वर्षों के इतिहास को सुस्पष्ट चार भागों में विभाजित किया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- इस ग्रंथ में शुक्ल जी ने साहित्यतिहास के प्रति निश्चित व स्पष्ट दृष्टिकोण का परिचय देते हुए युगीन परिस्थितियों के सन्दर्भ में इतिहास लेखन का कार्य किया।
- पहली बार यहाँ लेखकों के बजाय उनकी रचनाओं के साहित्यिक मूल्यांकन को महत्त्व दिया गया।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल

- शुक्ल जी ने सैं, ग्रियर्सन, मिश्र बंधुओं के इतिहास को कवि वृत्त संग्रह कहा है।
- सर्वप्रथम साहित्य इतिहास को आलोचना से पृथक करके शुक्ल जी ने अपने वैज्ञानिक और विकासवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया।

डॉ. रामकुमार वर्मा

- ग्रंथ का नाम –

हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास

- प्रकाशन वर्ष- 1938
- इस ग्रंथ में 693 से 1693 ई तक के काल खंड को आधार बनाया गया है।
- सम्पूर्ण ग्रंथ को सात प्रकरणों में प्रस्तुत किया है।

डॉ. रामकुमार वर्मा

- शुक्ल की मान्यताओं को दोहराते हुए आदिकाल को संधिकाल और चारणकाल दो भागों में बांटा गया है।
- 693 से हिन्दी साहित्य का आरम्भ मानने का कारण इन्होंने स्वयंभू को पहला कवि माना है।

धन्यवाद !